कतला

सिल्वर कार्प

रोहू

ग्रास कार्प

मृगल

कॉमन कार्प

उपरोक्त में केवल सुझाव दिया गया है। यह कोई सक्त सिद्धान्त नहीं है। बीज व जाति की उपलब्धता के अनुसार इसकी संख्या व दर में परिवर्तन किया जा सकता है।

मत्स्य बीज हेतु 10,000 से 15,000 बीज प्रति हैक्टेयर अथवा 1000 से 1250 बच्चे प्रति बीघा की सिफारिश की जाती है। साधारणतया मत्स्य बीज की पूर्ति पॉलीथीन के लिफाफों में ऑक्सीजन गैस भर कर की जाती है। परिवहन के दौरान लिए गए समय में लिफाफे के पानी का तापमान बढ़ गया होता है। अतः लिफाफा लाकर कुछ देर के लिए बंद अवस्था में ही तालाब के पानी में छोड़ देना चाहिए । उसके पश्चात् लिफाफा खोलकर तालाब का कुछ पानी मग या अन्य बर्तन की सहायता से लिफाफे में डालना चाहिए ताकि धीरे–धीरे लिफाफे के पानी का तापमान भी तालाब के पानी के तापमान के बराबर हो जाए। फिर धीरे–धीरे लिफाफे के पानी को बीज सहित तालाब के पानी में छोड़ देना चाहिए ।

सम्पर्क सूत्रः मत्स्य भवन
मात्स्यिकी निदेशालय, हिमाचल प्रदेश,
चंगर सैक्टर– बिलासपुर– 174 001
फोन/फैक्सः 01978–224068
ई मेल: fisheries-hp@nic.in
वैबसाईट : hpfisheries.nic.in

रा0 मु0 हि0 प्र0, शिमला––1824–मत्स्य/2015–23–07–2015––500 प्रतियां।

मत्स्य पालन के लिए उचित मछली प्रजातियां

मात्स्यिकी निदेशालय
हिमाचल प्रदेश, बिलासपुर।

मछली पालन के लिए उचित मछली बीज का संचयः

तालाब में उचित किस्म की मछलियों का बीज संचय करना बहुत ही आवश्यक है। इनका चुनाव करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिएः–

- एक साथ पाली जाने वाली मछलियां अलग–अलग सतहों पर अलग–अलग खुराक खाती हों।
- संचय की गई मछलियों में सह अस्तित्व के लिए आपस में मुकाबला नहीं होना चाहिए।
- कम से कम समय में अधिक से अधिक भार ग्रहण कर सकें, तथा
- ये सभी मछलियां परिपूरक आहार को आसानी से उपयोग में ला सकें।

साधारणतयः भारत में तीन देशी कार्प मछलियां कतला, रोहू एवं मृगल को एक साथ पाला जाता है। इन तीन मछलियों की आदतें तथा रहने का स्थान अलग–अलग है। कतला, जल सतह से सूक्ष्म जन्तु प्लवक खाती है। रोहू, सतह के नीचे पानी की गहराई में उपलब्ध सड़ते–गलते जैविक पदार्थों एवं वनस्पतियों को खाती है तथा मृगल तालाब के तल में उपलब्ध सड़े गले जैविक पदार्थ बालू तथा कीचड़ आदि को खाना पसन्द करती है। इसके अलावा तालाब में कुछ अन्य प्रकार का भोजन बचा रह जाता है। इसे पूर्ण रूप से उपयोग में लाने के लिए तीन विदेशी किस्मों की कार्प मछलियों का चयन किया जाता है, इसमें सिल्वर कार्प जो तालाब की सतह पर सूक्ष्म वनस्पति प्लवक खाना पसन्द करती है, पानी में उपलब्ध जलीय पौधों के लिए ग्रास कार्प मछली का प्रयोग किया जाता है। तीसरी कामन कार्प है जो स्वभाव से सर्वभक्षी होती हैं और तालाब में तल पर सभी प्रकार के जैविक पदार्थों को बड़े चाव से खाती हैं।

तालाब में पालने योग्य मछलियां

तालाब में उस तरह की मछलियों को पालने की सलाह दी जाती है जिनकी

- वार्षिक वृद्धि हो।
- बाजार में मांग अधिक हो।
- अधिक कीमत मिले।
- बीज आसानी से उपलब्ध हो।
- आपस में भोजन और आवास के लिए प्रतिस्पर्धा न हो।
- थोड़ी प्रतिकूल अवस्था सहने की भी शक्ति हो।

उपरोक्त गुण भारतीय मुख्य कार्प कतला, रोहू, और मृगल में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त विदेशी कार्प सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प और कॉमन कार्प में भी यह गुण मिलते हैं और इन सभी मछलियों को एक साथ तालाब में पाला जा सकता है।

मत्स्य बीज संग्रहण

तालाब में मत्स्य बीज संग्रहण से पूर्व यह जान लेना अति आवश्यक है कि तालाब में जल स्तर 1.0 से 1.5 मीटर गहरा है तथा संपूर्ण तालाब में प्राकृतिक आहार मौजूद है।

आम तौर पर पाली जाने वाली मछलियों में आहार ग्रहण करने बारे तीन प्रकार की विशेषताएं होती हैः–

1. वे मछलियां जो तालाब के जल की ऊपरी सतह पर से अपना आहार ग्रहण करती है– कतला अथवा सिल्वर कार्प।
2. वे मछलियां जो तालाब के मध्य भाग से अपना आहार ग्रहण करती हैं– रोहू तथा ग्रास कार्प ।
3. वे मछलियां जो तालाब के तले से अपना आहार ग्रहण करती है– कॉमन कार्प तथा मृगल।

अतः उपरोक्त को मद्देनजर रखते हुए निम्नानुसार मछली बीज का संग्रहण करने की सिफारिश की जाती हैः–

1. सतह के लिए 35% – कतला 10% सिल्वर कार्प 25%
2. मध्य भाग के लिए 35% – ग्रास कार्प 10% रोहू 25%
3. तालाब के तले के लिए 30% – मृगल10% कॉमन कार्प 20%